नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत-यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौता

अठारह वर्षों की लंबी कूटनीतिक प्रतीक्षा, असंख्य दौर की वार्ताओं और बदलते वैश्विक समीकरणों के बाद मंगलवार को भारत और यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौते का संपन्न होना केवल एक आर्थिक घटना नहीं है, बल्कि इक्कीसवीं सदी की वैश्विक शक्ति-संतुलन राजनीति में एक निर्णायक मोड़ भी है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन द्वारा इसे मदर आफ आल डील (सभी समझौतों की जननी) कहा जाना, इस समझौते की व्यापकता और दूरगामी प्रभावों को स्पष्ट करता है.

यह समझौता विश्व की दो बड़ी लोकतांत्रिक अर्थव्यवस्थाओं को एक साझा आर्थिक मंच पर लाता है, जो संयुक्त रूप से वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग पच्चीस प्रतिशत और अंतरराष्ट्रीय व्यापार का लगभग एक-तिहाई भाग नियंत्रित करती हैं. लगभग दो अरब लोगों के बाज़ार को जोड़ने वाला यह मुक्त व्यापार क्षेत्र न केवल व्यापारिक बाधाओं को समाप्त करता है, बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को नए सिरे से परिभाषित करने की क्षमता भी रखता है. आर्थिक दृष्टि से यह समझौता भारत के लिए उपभोक्ता हित और औद्योगिक प्रतिस्पर्धा,दोनों के नए द्वार खोलता है. यूरोपीय संघ से आयातित उत्पादों पर सीमा शुल्क में भारी कटौती का अर्थ यह है कि भारत के बाज़ार में विलासितापूर्ण वाहन, अंगूर-मदिरा, उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थ, चिकित्सा उपकरण तथा अत्याधुनिक औद्योगिक मशीनें पहले की तुलना में अधिक सुलभ होंगी. वाहनों पर लगने वाले अत्यधिक आयात शुल्क का एक अंकीय (सिंगल डिजिट) स्तर तक सिमटना तथा मदिरा पर शुल्क में चरणबद्ध कमी, उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति को नई गति प्रदान करेगी.

दरअसल,इस समझौते की वास्तविक शक्ति केवल सस्ते आयात तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत के निर्यात पक्ष में निहित है. वस्त्र, चमड़ा, रत्न एवं आभूषण तथा समुद्री उत्पाद जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्रों को यूरोपीय बाज़ारों में शुल्क-मुक्त प्रवेश मिलना, भारत में रोज़गार सृजन और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के विस्तार का बड़ा अवसर है. यह पहल 'मेक इन इंडिया' को मात्र नारा न रहकर वैश्विक व्यापार का व्यावहारिक मॉडल बनाने की दिशा में ठोस कदम सिद्ध होती है. सर्विस सेक्टर में भी यह समझौता भारत के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक लाभ लेकर आया है. सूचना प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों, अभियंताओं और वित्तीय सलाहकारों के लिए यूरोप में सेवाएं देना सरल होना, भारत की मानव पूंजी को वैश्विक मान्यता दिलाने वाला कदम है. इसके साथ ही विनिर्माण, बुनियादी ढांचे और स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में संभावित यूरोपीय निवेश, भारत की दीर्घकालिक विकास यात्रा को स्थायित्व प्रदान करेगा. दरअसल,रणनीतिक स्तर पर यह समझौता चीन-केंद्रित वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के विकल्प के रूप में भारत को स्थापित करता है. जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए यूरोपीय संघ द्वारा हरित प्रौद्योगिकी सहयोग और आर्थिक सहायता, भारत की सतत विकास संबंधी प्रतिबद्धताओं को मजबूती प्रदान करती है तथा हरित विकास को आर्थिक नीति के केंद्र में स्थापित करती है.

निस्संदेह, इस समझौते के क्रियान्वयन के दौरान घरेलू उद्योगों की सुरक्षा, कृषि हितों की रक्षा और नियामक संतुलन जैसी चुनौतियाँ सामने आएंगी. किंतु दीर्घकाल में यह मुक्त व्यापार समझौता भारत को एक विश्वसनीय और प्रभावशाली वैश्विक आर्थिक साझेदार के रूप में स्थापित करने की क्षमता रखता है.

यदि संसदों की स्वीकृति समयबद्ध रूप से प्राप्त होती है और नीति-स्तर पर सतर्कता बनी रहती है, तो वर्ष 2027 तक लागू होने वाला यह समझौता भारत की आर्थिक यात्रा में एक नया अध्याय जोड़ेगा,जहां व्यापार केवल लेन-देन का माध्यम नहीं रहेगा, बल्कि रणनीति, आत्मविश्वास और वैश्विक नेतृत्व का प्रतीक बनेगा.

मोदी की रणनीति

मदर ऑफ ऑल डील कूटनीति

दिलीप झा

> मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) को भारत द्वारा अबतक किए गए व्यापार समझौतों में सबसे बड़ा कहा जा रहा है. समझौते में शामिल बिंदुओं की जांच पड़ताल के बाद इस पर हस्ताक्षर किए जाएंगे. हालांकि बताया जा रहा है कि इस समझौते को लागू करने में कुछ समय लग सकता है, क्योंकि इसके लिए यूरोपियन यूनियन संसद की मंजूरी जरूरी है. जबकि भारत में सिर्फ कैबिनेट मंजूरी की आवश्यकता है. इस समझौते की सबसे खास बात यह है कि 90 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादों पर आयात शुल्क शून्य हो जाएगा. दरअसल यूरोपीय यूनियन बाजार भारत के कुल निर्यात का 17 प्रतिशत है और इस ग्रुप का भारत को निर्यात उसके कुल विदेशी शिपमेंट का नौ प्रतिशत है. दूसरी ओर भारत ने अमेरिकी राष्ट्रपति को स्पष्ट कहा कि बै रूस से हमारी तेल खरीदी घटी लेकिन बंद नहीं हुई है. इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि भारत ने कच्चे तेल की खरीद में कम जोखिम और ज्यादा भरोसे की कूटनीति से ट्रंप को वैश्विक मंच पर चारोखाने चित कर दिया है. मोदी की इस पटखनी को अमेरिका का इतिहास याद रखेगा क्योंकि इससे अमेरिका की चौधराहट खत्म हो जाएगी और विश्व शांति के मार्ग पर प्रशस्त होगा.

आज पूरी दुनिया में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ आक्रोश है क्योंकि उन्होंने विश्व के सभी ताकतवर देशों को टैरिफ के नाम पर धमकाने का काम किया है. ट्रंप की इस नीति के विरोध में वैश्विक स्तर पर खासकर यूरोपीय देश और इस्लामिक राष्ट्र खुलकर सामने आ गए हैं. निस्संदेह ट्रंप की हेकड़ी से लोकतांत्रिक व्यवस्था को बड़ा आघात पहुंचा है. किसी देश के आंतरिक मामलों में इस तरह का हस्तक्षेप पहले कभी नहीं देखा गया जैसा आजकल अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप दिखाने की कोशिश कर रहे हैं. अपने फायदे के लिए अमेरिका जिस राह पर चल रहा है वह वैश्विक परिदृश्य के लिए ख़तरनाक ही नहीं विनाशकारी साबित होगा. इस तरह के उथल-पुथल के बीच भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी मानवतावादी प्रतिबद्धताओं के साथ नवीन कूटनीति अपनाकर यूरोपीय यूनियन के साथ मदर ऑफ ऑल डील को अंजाम देने वाले विश्व के पहले नेता बन गए हैं. 27 जनवरी को ईयू से हुए समझौते भारत के लिए गेम चेंजर साबित होंगे.

विश्व के ताकतवर देशों के नेताओं को मोदी के नेतृत्व वाले भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था पर भरोसा है और यही कारण है कि वे भारत के साथ व्यापारिक संबंध को और मजबूत करने के लिए बेहद उत्साहित हैं. आज स्थिति यह है कि रूस और चीन के साथ यूरोपीय यूनियन के देश इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रेलिया समेत अनेकों देश के अलावा रूस और चीन भी भारत के भरोसेमंद साथी बनकर चलने को तैयार हैं.

भारत के 77वें गणतंत्र दिवस के मौके पर चीन के राष्ट्रपति जिनपिंग ने भारत के साथ बेहतर संबंध बनाने की प्रतिबद्धता दोहराई है. प्रधानमंत्री मोदी की कठोर परिश्रम वाली कार्यशैली बिना थके लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ते कदम से भारत वाकई विश्व गुरु बनने की राह पर अग्रसर है तो देश के अंदर उनकी आलोचना करने वाला विपक्ष अचंभित है कि यह कैसे संभव हो रहा है. हालांकि विपक्षी नेताओं को यह भलीभांति पता है कि हर असंभव कार्य को संभव बनाने वाले व्यक्तित्व का नाम है नरेंद्र मोदी. अमेरिका द्वारा भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ थोपने के बाद विपक्ष द्वारा हाय तौबा मचाने की बहुत कोशिश की गई कि भारत बर्बाद हो जाएगा, इसका व्यापारिक रिश्तों पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा लेकिन मोदी ने हिम्मत और कूटनीतिक तरीके से संपूर्ण विश्व के देशों को अपने साथ लेकर अमेरिका को यह सबक सिखाया कि किसी भी देश के शासक को सबसे पहले मानववादी विचार को सुनिश्चित करना चाहिए. इसमें कोई किंतु-परंतु नहीं होना चाहिए.

मोदी की धैर्यवान राजनीति ने यह बताया कि किसी देश का राष्ट्राध्यक्ष दिन में कुछ और रात में कुछ और बोलकर विश्व के अन्य देशों का भरोसा नहीं जीत सकता. क्योंकि इससे राष्ट्राध्यक्ष की गरिमा का हनन होता है. यही कारण है कि ट्रंप की चहुं ओर जमकर आलोचना हो रही है. अपने देश में भी ट्रंप आलोचनाओं से बुरी तरह घिर गए हैं. ट्रंप के विरोधी नेता नहीं बल्कि उनके शुभचिंतक नेता भी उन्हें नसीहत दे रहे हैं कि भारत के साथ ट्रेड वार नहीं ट्रेड दीवार तैयार करने में ही अमेरिका का हित है. यही कारण है कि दावोस में अपने दिए गए भाषण में ट्रंप ने एक बार फिर खुलकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ की और अब उनके वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने संकेत दिए हैं कि भारत पर रूसी तेल खरीद के कारण लगाया गया 25 प्रतिशत पेनल्टी टैरिफ हटाया जा सकता है. अमेरिका ने भारत से आयात पर 25 प्रतिशत पेनल्टी टैरिफ के साथ 50 प्रतिशत टैक्स लगा रखा है. इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि भारत का यूरोपीय यूनियन के साथ होने वाले सबसे बड़े मुक्त व्यापार समझौते को लेकर ट्रंप प्रशासन दबाव में है. उसके पास कोई रास्ता नहीं बचा है.

वहीं, भारत अपने रुख पर आज भी अडिग है कि वह अपने देश हित में किस देश से कितना तेल खरीदेगा, यह उसका आंतरिक मामला है और इसमें किसी अन्य राष्ट्र का हस्तक्षेप उसे स्वीकार नहीं है. भारत वैश्विक अनिश्चितता के बावजूद विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है. अमेरिकी प्रभुत्व को कम करने की दिशा में 18 साल पहले ही कवायद शुरू हो गई थी. भारत-ईयू के बीच व्यापार को लेकर 27 देशों के साथ वर्ष 2007 से ही बातचीत शुरू थी. समझौता अपने आखिरी पड़ाव तक नहीं पहुंच रहा था. लेकिन अब अमेरिकी दादागिरी के खिलाफ पूरा विश्व लामबंद हो गया है.

(लेखक नवभारत भोपाल के संपादक हैं)

विंध्य की डायरी

नगरीय निकायों में राजनैतिक नियुक्तियों की बाट जोहते नेता

डॉ. रवि तिवारी

विंध्य के ज्यादातर नगरीय निकायों में अभी तक राजनैतिक नियुक्तियां नहीं होने से सत्तारूढ़ दल के कद्दावर नेता परेशान नजर आ रहे हैं. संगठन की सहमति के बाद भी अटके इस मामले के लिए सीधे तौर पर कौन जिम्मेदार है, यह तो स्पष्ट नहीं है, पर नियुक्ति नहीं होने से असंतुष्ट नेताओं की फेहरिस्त धीरे-धीरे लम्बी होती जा रही है. संगठन के स्थानीय पदाधिकारियों का कहना है कि उन्होंने शासन ने जैसा प्रस्ताव चाहा था, उसे तैयार कर संगठन के माध्यम से ऊपर भेज दिया है. मामला कहाँ और क्यों अटका हुआ है , इस प्रश्न के उत्तर में वो चुप्पी साध लेते हैं. हालांकि जानकारों को अगर माने तो विन्ध्य की ज्यादातर नगरीय निकायों में भाजपा का कब्जा है,लेकिन सिंगरौली और रीवा में इस बार नगरीय निकाय में सत्तारूढ़ दल की दाल अच्छे से गल नहीं पायी. तमाम कोशिशों के बावजूद दोनों स्थानों के महापौरों ने अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व कायम रखते हुए अपनी पार्टी के प्रति अपनी निष्ठा कायम रखी.ऐसी स्थिति में सरकार भी निकायों में राजनैतिक नियुक्ति के मसले को टाले हुए है ताकि नियुक्ति के बाद कोई नया घटनाक्रम न पैदा हो जाये.फिलहाल निकायों का कार्यकाल तीन वर्ष के लगभग पूरा हो गया है. ऐसे में नियुक्ति के प्रबल दावेदार भी यही कहने लगे हैं कि यदि पार्टी ने उनसे इस पर कोई राय मांगी तो उन्हें इंकार करना ही बेहतर होगा,क्योकि अब करने का समय बचा नहीं है.जन अपेक्षा पूरी नहीं हुई तो आगे राजनैतिक भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा.

स्वयंभू अध्यक्षों के जिम्मे जिला

सत्ता और विपक्ष दोनों दलों की जिला कार्यकारिणी को लेकर विन्ध्य के सतना जिले में लंबे समय से अनिर्णय की स्थिति बनी हुई है. फिलहाल भाजपा और काग्रेस दोनों के घोषित जिला अध्यक्ष जिले के संगठन को अपनी मर्जी से चला रहे हैं. भाजपा में पदाधिकारी घोषित नही होने से पार्टी के कार्यक्रमों को संयोजक और प्रभारी नियुक्त कर काम चलाने की नई परम्परा चलन में आ गई है. ज्यादातर अध्यक्ष के करीबियों को दायित्व सौपे जा रहे हैं. दूसरी तरफ कांग्रेस का हाल पहले से भी बदतर नजर आ रहा है. पहले जो चंद लोग संगठन की गतिविधियों में सक्रिय नजर आते थे वे पार्टी के कार्यक्रमों से पर्याप्त दूरी बनाए हुए हैं. जानकार यह मान रहे हैं कि इससे पार्टी के अंदर गुटबाजी और बढ़ रही है. दोनों पार्टी को स्वयंभू संगठन संचालन की यह रणनीति कही भविष्य में भारी न पड़ जाए.

विंध्य में एस आई आर को लेकर चुप्पी

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश पर हो रहे एस आई आर यानी मतदाता सूची पुनरीक्षण का काम का दूसरा चरण अंतिम दौर पर है ,लेकिन पहले चरण के बाद अचानक इस पूरे काम को लेकर दलों में चुप्पी साध गई है. यह महसूस किया जा रहा की पहले चरण के बाद सामने आए ड्राफ्ट से विपक्ष भी संतुष्ट नजर आ रहा है. हालांकि चर्चा यह भी है कि विन्ध्य के कुछ जिलों में लाखों नाम सूची से बाहर हो रहे हैं. प्रशासन भी हटाए जाने वाले नामों के प्रभावितों से आवश्यक दस्तावेज लेने में कोई कोताही नही बरत रहा. दूसरे प्रान्तों से ब्याह कर आयी महिलाओं को दिक्कतें ज्यादा आ रही हैं. उन्हें अपने मायके से जानकारी मांगा कर जमा करनी पड़ रही है.सभी को अंतिम सूची का इंतजार है तभी पता लग पाएगा किस जिले से कितने मतदाता घट गए.

सुरक्षा की कमजोर कड़ी है घुसपैठ का मुद्दा..!

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीते बरस भी 15 अगस्त को लालकिले से भारत में मौजूद घुसपैठियों का जिक्र किया था, फिर उसी महीने और अगले महीने यही बात उन्होंने बिहार चुनावों में भी दोहराई थी. अब बंगाल चुनावों से पहले उनकी यह चिंता चरम पर दिखती है. प्रधानमंत्री ही नहीं गृहमंत्री ने भी कई बार इस आशय के बयान दिये हैं कि वे घुसपैठियों को अब चुन-चुनकर देश के बाहर निकालने वाले हैं. प्रधानमंत्री ने छह महीने पहले घुसपैठियों की समस्या से निबटने के लिये डेमोग्राफी मिशन शुरू करने की बात कही और घोषणा की थी कि बहुत जल्द ये मिशन अपना काम शुरू करेगा.

इस मिशन के समयबद्ध लक्ष्य, बजट, जिम्मेदार एजेंसियां और सार्वजनिक रिपोर्टिंग तंत्र तथा क्रियान्वयन को लेकर स्थिति अस्पष्ट है. घुसपैठिए सरकारी योजनाओं और राजनीतिक संरक्षण का लगातार अनुचित लाभ उठाते जा रहे हैं, जिससे सरकार पर अनावश्यक आर्थिक बोझ बढ़ रहा है. सामाजिक तनाव और अपराधों में वृद्धि हो रही है. कृषि, निर्माण और घरेलू मजदूरी के क्षेत्रों में घुसपैठियों के सस्ते श्रमिक बन जाने से स्थानीय मजदूरों की रोजी-रोटी पर असर पड़ता है. घुसपैठिए वोटर आईडी क्या घुसपैठियों को वापस भेजा जा सकेगा और आधार कार्ड जैसे फर्जी दस्तावेज बनाकर चुनाव प्रक्रिया में हस्तक्षेप कर लोकतंत्र को प्रदूषित कर ही रहे ही हैं, इसके अतिरिक्त वे सीमावर्ती राज्यों में नकली करेंसी, नशीली दवाओं, गायों की तस्करी और आतंकवादियों के स्लीपर सेल बनने का माध्यम भी बन रहे हैं.

घुसपैठ से सबसे ज्यादा प्रभावित बंगाल, असम और बिहार में भाजपा इस मुद्दे को लगातार उठा रही है पर दुखद तथ्य है कि घुसपैठ और अवैध प्रवासियों की समस्या पर अब तक भय और अवैध घुसपैठियों का मुद्दा जोर पकड़ रहा है. प्रधानमंत्री अपनी चुनावी सभाओं में लगातार घुसपैठियों तथा अवैध अप्रवासियों से मुक्त भारत की बात कर रहे हैं. वे इस समस्या को कानून-व्यवस्था का ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और जनसांख्यिकीय संतुलन का प्रश्न भी मानते हैं. विगत सरकारों को दोष देने और हर बार चुनावों में इस मुद्दे को उठाने, कुछ घोषणाओं और आधे अधूरे प्रयासों के अलावा कोई ठोस समाधान अभी तक सामने नहीं आया है.

✍ **संजय श्रीवास्तव**

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

चौपाल

वादे गए तेल लेने, अब तो मलाई की बारी है !

पुराने मंझे हुए नागरिक चाचा जो चश्मे के ऊपर से दुनिया देखते हैं अपनी ही पुरानी धुनों में चाय की चुस्कियों के साथ खोए नजर आ रहे हैं. उन्हें अपने सपनों में खोता देख भतीजा गुस्से में अखबार पटकते हुए बोला- देख रहे हैं चाचा? चुनाव के नतीजे आए हफ्ता नहीं बीता और शहर की नालियां फिर जाम होने लगी हैं. जिस नेता ने पैर छूकर आशीर्वाद लिया था, आज उनका बॉडीगार्ड कह रहा है कि साहब मीटिंग में व्यस्त हैं.

भतीजे की बात सुन चाचा चाय की चुस्की लेते हुए बोले- अरे बेटा, तू भी नादान ही रहा। अभी नेता जी मीटिंग नहीं कर रहे, वो सेटिंग कर रहे हैं. अब तिजोरी की चाबी (सभापति पद) और शहर की कमान (महापौर पद) का खेल शुरू हो गया है. अब जनता की याद उन्हें सीधे पांच साल बाद आएगी. चाचा की बात सुन भतीजा बोला-तो हम क्या सिर्फ बटन दबाने वाली मशीन हैं? चुनाव के समय तो ऐसे दावे कर रहे थे जैसे शहर को कल ही पेरिस बना देंगे. अब न कोई समस्या सुन रहा है, न कोई फोन उठा रहा है. सब अपनी गोटियां फिट करने में लगे हैं.

भतीजे की बात सुन चाचा बोले- देख भतीजे, राजनीति का सीधा गणित है. चुनाव से पहले वो हमारे चरणों में होते हैं, और चुनाव के बाद हम उनके दफ्तर की सीढ़ियों पर. अभी तो आंकड़ों का बाजार लगा है. कौन किधर बिकेगा, कौन किसके पाले में जाएगा, इसी में उनका भविष्य सेट होगा. जनता का क्या है? वो तो ठगी जाने के लिए ही बनी है. चाचा की बात सुन भतीजा बोला-पर चाचा, यह तो सरासर धोखा है! हमने विकास के नाम पर वोट दिया था, इसलिए नहीं कि वो जीतकर अपना घर भरें और हम धूल फांकें. भतीजे की समस्या सुन चाचा धीरे से बोले- विकास तो होगा बेटा, लेकिन पहले उनके करीबियों का होगा. जब तक महापौर की कुर्सी की सौदेबाजी पूरी नहीं होती, तब तक मोहल्ले का कचरा वहीं पड़ा रहेगा. अभी उन्हें गटर की बदबू नहीं, सत्ता की खुशबू आ रही है. चाचा की बात सुन भतीजा बोला-सच में, ये नेता चुनाव जीतते ही आम आदमी को अपनी याददाश्त से ऐसे डिलीट कर देते हैं जैसे कोई फालतू फाइल हो.

भतीजे की बात सुन फिर चाचा बोले-बिल्कुल ! और याद रखना, जब तक तिजोरी की चाबी उनके हाथ में नहीं आती, तब तक वो इसी तरह अपनी प्लानिंग करेंगे. जनता का दुखड़ा सुनने के लिए तो फिर से अगला चुनाव आना पड़ेगा. तब तक तू तू अ अपनी चाय पी और ठगा हुआ महसूस करना बंद कर, क्योंकि ये खेल पुराना है! इसके बाद दोनों चाचा भतीजे अपने-अपने काम में जुट गए.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12153
- डॉ. सागर खादीवाला

1		2	■	3	4		5
	■	6	7			■	
8	9	■	10			11	■
12		13		■	14		
■	15			16	■		■
17		■	■	18			19
	■	20	21		■	22	
23		■	24			■	

बाएं से दाएं

1. दफ्तर का कार्य करने वाला, कागजात आदि रखने वाला कर्मचारी (उर्दू) 3. मदद, सहायता 6. गहरी और युक्तियुक्त बात 8. बालक, केश 10. जोर से भिड़ना 12. पैर के नाखून से लेकर सिर तक के सब अंग 14. अभाव, कमी 15. संत विनोबा भावे के साथ इस स्थान का नाम जुड़ा है 17. चिट्ठी, पत्री, पाती 18. असंतोष या विरोध आदि प्रकट करने के लिए कल-कारखानों बाजारों तथा दूकानों आदि का बंद होना 20. उत्तर, मुकाबले की चीज, नौकरी से हटाने की आज्ञा 22. मुसलमानों का मजहबी त्योहार 23. मान-चित्र, भवन आदि का रेखा-चित्र (उर्दू) 24. ओर, बगल, पक्ष (उर्दू)

ऊपर से नीचे

1. द्वारपाल, चौकीदार (उर्दू) 2. किसी कार्य को करने का ढंग, रस्म, कायदा 3. आने-जाने का चौड़ा और पक्का मार्ग 4. साथ चलने वाले, सहगामी (उर्दू) 5. चाल, हरकत, दशा 7. काट खाने वाला 9. जिसके पास लाखों रुपये की संपत्ति हो 11. टिकिया के आकार की एक सौंधी खस्ता मिठाई 13. कल्याण, मंगल, रूद्र, परमेश्वर (सं.) 16. पथ-प्रदर्शक, रास्ता बताने वाला, नायक (उर्दू) 17. भरण-पोषण, परवरिश 19. वजन या भार ऊपर लेना 21. वायु, हवा, वैद्यक के अनुसार शरीर की वह वायु जिसके विकार से रोग उत्पन्न होते हैं

Solution 12152

दि	मा	ग	■	बा	ल	प	न
ल	त	■	मा	त	ह	त	■
च	म	की	ला	■	का	न	न
स्प	■	क	■	बा	ना	■	क्शा
■	स	र	ह	द	■	अ	■
आ	दी	■	■	रा	क	सि	न
का	■	रा	मा	य	ण	■	के
र	ज़ू	■	त्रा	ण	■	शू	ल

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में निर्धारित कार्यों में आकस्मिक रूकावट आयेंगी, व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है, व्यय में वृद्धि होगी, मानसिक अशांति रहेगी, वर्ष के मध्य में शासन से लाभ प्राप्त होगा, व्यक्तित्व का विकास होगा, सामाजिककार्यों में ख्याति प्राप्त होगी, वर्ष के अन्त में भागदौड़ से सफ्लता प्राप्त होगी, आर्थिक कार्यों में लाभ प्राप्त होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यो में आकस्मिक रूकावट आयेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ विवाद होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ प्राप्त होगा, तथा व्यक्तिगत संबंधों में मनमुटाव हो सकता है, सिंह राशि के व्यक्तियों को यात्रा आदि से सतर्कता बांछनीय, सामाजिक कार्यो में ख्याति प्राप्त होगी.

धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को परिश्रम की अधिकता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियोंको प्रतिस्पर्धा में सफ्लता मिलेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों की आर्थिक उन्नति होगी, सफ्लता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक निडर तथा परिश्रमी होगा. आय के एक से अधिक साधन उपलब्ध होंगे. संगीत कला और धार्मिक कार्यो में इनकी अच्छी रूचि रहेगी. माता पिता को हमेशा सुखी रखेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

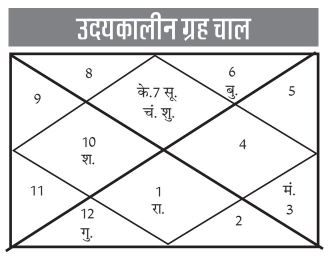

मेष- सेहत पर ध्यान दें, आय के नए साधन मिलने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. व्यवसायिक दायित्वों की पूर्ति होगी. पारिवारिक कार्यो में लगन रहेगी.

वृषभ- लंबित मामले सुलझने के आसार हैं. योजनाओं के आकार देने में सफ्लता मिलेगी. स्वयं की सूझबूझ से लिये गये निर्णय सार्थक होंगे. अतिथि वृश्चिकमन का योग है.

मिथुन- प्रापर्टी संबंधी विवाद हल होगा. विरोधियों से बचकर रहें. काई मांगलिक कार्य संपन्न होगा. पारिवारिक वातावरण में प्रसन्नता रहेगी.

कर्क- प्रियजन के संबंध में शुभ समाचार मिलेंगे. अनुभवी लोगों का साथ सफ्लता देगा. कोई शुभ कार्य बनेगा. पद प्रतिष्ठा एवं धन की प्राप्ति होगी.

सिंह- मन ही मन किसी बात को लेकर परेशान हो सकते हैं, आपके कार्यो में निखार आयेगा. लिये गये निर्णय में सतर्कता बांछनीय है. योजनाओं में प्रगति होगी.

कन्या- आपके रूखे व्यवहार से करीबी लोग नाराजहो सकते है. संतान के कार्यो में सफ्लता सुख और संतोष का अनुभव होगा. आशा से अधिक कार्यो में सफ्ल होंगे.

तुला- कामकाज की धीमी गति से अधिकारी व्यथित होंगे. नए संपर्को से कार्यो में नई दिशा आर्थिक मामलों में सफ्लता मिलेगी. संतान के मामलों में व्यय होगा.

वृश्चिक- आर्थिक मामलों की अनदेखी से नुकसान हो सकता है. स्वास्थ्य एवं प्रतिष्ठा के प्रति सजग रहें. खानपान पर नियंत्रण रखें. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

धनु- भौतिक सुख सुविधाओं पर बड़े खर्च की संभावना है. युवा अच्छी सफ्लता अर्जित करेंगे. पारिवारिक जीवन में जिम्मेदारियों का अनुभव होगा.

मकर- शीघ्रता में अच्छी योजना शुरू होगी. कडी मेहनत करके बड़ी सफ्लता मिलेगी. सामाजिक कार्यो में रूचि रहेगी. प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. मन: स्थिति संतुलित रहेगी.

कुम्भ- विपरीत विचारधारा के लोगों का साथ करने से नुकसान होगा. जीविका के क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी. पारिवारिक निकटता बढ़ेगी. सम्मान में यथोचित वृद्धि होगी.

मीन- कार्य योजना व नजरिये में बदलाव करके अच्छी सफ्लता मिलेगी. जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा. ऐसा कोई कार्य बनेगा. जिससे आपको संतोष प्राप्त होगा.

पंचांग

रा.मि. 08 संवत् 2082 माघ शुक्ल दशमीं बुधवासरे दिन 2/0, कृतिका नक्षत्रे प्रात: 7/15 तदुपरि रोहिणी नक्षत्रे रातअंत 5/35, ब्रह्म योगे रात 10/16, गर करणे सू.उ. 6/36, सू.अ. 5/24, चन्द्रचार वृषभ, शु.रा. 2,4,5,8,9,12 अ.रा. 3,6,7,10,11,1 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

माघ शुक्ल दशमीं को कृतिका नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, गुड़ खांड, शक्कर, लालमिर्च, आदि में तेजी का रूख रहेगा. नये वस्तुओं में पिछली चाल चलेगी. आज जिन वस्तुओं में तेजी का रूख रहे, उसी में मंदी होगी. भाग्यांक 1776 है.

SUDOKU 7285

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7284

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7